قُلۡ مَن كَانَ عَدُوًّا لِّجِبۡرِيلَ فَإِنَّهُۥ نَزَّلَهُۥ عَلَىٰ قَلۡبِكَ بِإِذۡنِ
ٱللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَهُدٗى وَبُشۡرَىٰ لِلۡمُؤۡمِنِينَ ٩٧
مَن كَانَ عَدُوّٗا لِّلَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَجِبۡرِيلَ وَمِيكَىٰلَ
فَإِنَّ ٱللَّهَ عَدُوّٞ لِّلۡكَٰفِرِينَ ٩٨ وَلَقَدۡ أَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ ءَايَٰتِۭ
بَيِّنَٰتٖۖ وَمَا يَكۡفُرُ بِهَآ إِلَّا ٱلۡفَٰسِقُونَ ٩٩ أَوَكُلَّمَا عَٰهَدُواْ
عَهۡدٗا نَّبَذَهُۥ فَرِيقٞ مِّنۡهُمۚ بَلۡ أَكۡثَرُهُمۡ لَا يُؤۡمِنُونَ ١٠٠ وَلَمَّا
جَآءَهُمۡ رَسُولٞ مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِ مُصَدِّقٞ لِّمَا مَعَهُمۡ نَبَذَ فَرِيقٞ
مِّنَ ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ كِتَٰبَ ٱللَّهِ وَرَآءَ ظُهُورِهِمۡ كَأَنَّهُمۡ
لَا يَعۡلَمُونَ ١٠١ وَٱتَّبَعُواْ مَا تَتۡلُواْ ٱلشَّيَٰطِينُ عَلَىٰ مُلۡكِ
سُلَيۡمَٰنَۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيۡمَٰنُ وَلَٰكِنَّ ٱلشَّيَٰطِينَ كَفَرُواْ
يُعَلِّمُونَ ٱلنَّاسَ ٱلسِّحۡرَ وَمَآ أُنزِلَ عَلَى ٱلۡمَلَكَيۡنِ بِبَابِلَ
هَٰرُوتَ وَمَٰرُوتَۚ وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنۡ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَآ إِنَّمَا
نَحۡنُ فِتۡنَةٞ فَلَا تَكۡفُرۡۖ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنۡهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِۦ
بَيۡنَ ٱلۡمَرۡءِ وَزَوۡجِهِۦۚ وَمَا هُم بِضَآرِّينَ بِهِۦ مِنۡ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذۡنِ
ٱللَّهِۚ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمۡ وَلَا يَنفَعُهُمۡۚ وَلَقَدۡ عَلِمُواْ لَمَنِ
ٱشۡتَرَىٰهُ مَا لَهُۥ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ مِنۡ خَلَٰقٖۚ وَلَبِئۡسَ مَا شَرَوۡاْ بِهِۦٓ
أَنفُسَهُمۡۚ لَوۡ كَانُواْ يَعۡلَمُونَ ١٠٢ وَلَوۡ أَنَّهُمۡ ءَامَنُواْ وَٱتَّقَوۡاْ لَمَثُوبَةٞ
مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِ خَيۡرٞۚ لَّوۡ كَانُواْ يَعۡلَمُونَ ١٠٣

**Theme**

| | |
|---|---|
| Their animosity for Jibraeel and other angels. Israelites faithlessness. Their accusation against the Prophet Solomon (Suleiman). Their learning of witchcraft. | जिब्राईल और अन्य फ़रिश्तों से उनकी अदावत। बनी इस्राईल की बेईमानी। हज़रत सुलैमानं पर उनका इल्ज़ाम। उनका जादूगरी सीखना। |

## Tarjumani

| | |
|---|---|
| Say O Muhammad: "Whoever is the enemy of Jibrael (Gabriel) should know that he revealed this Qur'an to your heart by Allah's command, which confirms previous scriptures, and is a guidance and good news for the believers." Let them know that whoever is an enemy of Allah, His angels, His Rasools, Jibrael (Gabriel) and Mikael (Michael); Allah is an enemy to such unbelievers. We have sent down to you clear revelations: no one can deny them except the transgressors. Has it not been the case that every time they made a covenant a group of them threw it aside? But the fact is that most of them do not believe. When there came to | इनसे कहो कि जो कोई जिबरील से अदावत रखता हो, उसे मालूम होना चाहिए कि जिबरील ने अल्लाह ही के इज़्न से यह कुरआन तुम्हारे कल्ब पर नाज़िल किया है, जो पहले आई हुई किताबों की तस्दीक व ताईद करता है और ईमान लानेवालों के लिए हिदायत और कामयाबी की बशारत बनकर आया है | (अगर जिबरील से इनकी अदावत का सबब यही है तो कह दो कि) जो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिबरील और मीकाईल के दुश्मन हैं, अल्लाह उन काफ़िरों का दुश्मन है | हमने तुम्हारी तरफ़ ऐसी आयात नाज़िल की हैं जो साफ़-साफ़ हक़ का इज़हार करनेवाली हैं | और उनकी पैरवी से सिर्फ़ वही लोग इनकार करते हैं जो फ़ासिक हैं | क्या हमेशा ऐसा ही नहीं होता रहा है कि जब इन्होंने कोई अहद किया तो इनमें से |

| | |
|---|---|
| them a Rasool from Allah confirming their own Holy Book, a group from those to whom the Holy book was given cast off the Book of Allah behind their backs as if they knew nothing about it and accepted what the shaitans falsely attributed to the kingdom of Sulaiman; not that Sulaiman was an unbeliever, it were the shaitans who were unbelievers; they taught witchcraft to the people and that which was revealed to the two angels, Haroot and Maroot in the city of Babil (Babylon). Yet, these two angels never taught magic to anyone without saying: "We have been sent to tempt you; do not renounce your faith." In spite of this warning, those people kept on learning from both of them, the magic of which could cause discord between husband and wife; although they could harm none with it except with Allah's permission. They learned, indeed, what harmed them and did not profit them; even | एक गरोह ने उसे ज़रुर ही बाला-ए-ताक रख दिया? बल्कि उनमें से अकसर ऐसे ही हैं जो सच्चे दिल से ईमान नहीं लाते | और जब उनके पास अल्लाह की तरफ़ से कोई रसूल उस किताब की तस्दीक़ व ताईद करता हुआ आया जो इनके यहाँ पहले से मौजूद थी तो इन अहले-किताब में से एक गरोह ने किताबुल्लाह को इस तरह पसे-पुश्त डाला गोया कि वे कुछ जानते ही नहीं | और लगे उन चीज़ों की पैरवी करने जो शयातीन, सुलैमान की सल्तनत का नाम लेकर पेश किया करते थे, हालाँकि सुलैमान ने कभी कुफ़्र नहीं किया, कुफ़्र के मुर्तकिब तो वे शयातीन थे जो लोगों को जादूगरी की तालीम देते थे | वे पीछे पड़े उस चीज़ के जो बाबिल में दो फ़रिश्तों, हारुत व मारुत, पर नाज़िल की गई थी | हालाँकि वे (फ़रिश्ते) जब भी किसी को उसकी तालीम देते थे तो पहले साफ़ तौर पर मुतनब्बेह कर दिया करते थे कि "देख, हम महज एक आज़माइश हैं, तू कुफ़्र में मुब्तला न हो | फिर भी ये लोग उनसे वह चीज़ सीखते थे जिससे शौहर और बीवी में जुदाई डाल दें | ज़ाहिर था कि इज़्ने-इलाही के बगैर वे इस ज़रीए से किसी |

| | |
|---|---|
| though they knew fully well that the buyers of magic would have no share in the happiness of the Hereafter. Surely, they sold their souls for a bad price, if they could understand it! If they would have believed (accepted Islam) and kept themselves away from evil, there would have been a better reward from Allah, if they could understand it! | को ज़रर नहीं पहुँचा सकते थे, मगर इसके बावजूद वे ऐसी चीज़ सीखते थे जो ख़ुद उनके लिए नाफाबख्श नहीं, बल्कि नुकसानदेह थी, और उन्हें ख़ूब मालूम था कि जो इस चीज़ का ख़रीदार बना, उसके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं | कितनी बुरी मताअ थी जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला, काश! उन्हें मालूम होता अगर वे ईमान और तकवा इखतियार करते तो अल्लाह के यहाँ उसका जो बदला मिलता वह उनके लिए ज़्यादा बेहतर था | काश उन्हें ख़बर होती! |
| **Tafsir** | |
| | |